ISSN No. 0971-796 ×

प्राकृत-विद्या
पागद-विज्जा

PRAKRIT-VIDYA
Pāgada-Vijjā

प्राकृत, अपभ्रंश आदि प्राच्य भारतीय भाषाओं की हिन्दी तक की विकास-यात्रा दर्शानेवाली समर्पित त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

A quarterly journal devoted to researches on the development of Prakrit, Apabhramsha and Ancient Indian Languages upto Hindi Language

वीर निर्वाण संवत् 2546 अक्टूबर-दिसम्बर 2019 वर्ष 31 अंक 4
Veer Nirvan Samvat 2546 October-December 2019 Year 31 Issue 4

आचार्य कुन्दकुन्द समाधि-संवत् 2025

सम्पादक-मण्डल

श्री पुनीत जैन
(नवभारत टाइम्स)

डॉ. रमेश कुमार पाण्डेय
(श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ)

मानद सम्पादक

प्रो. (डॉ.) वीरसागर जैन
(श्री ला.ब..शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली)

प्रबन्ध सम्पादक

श्री कमलकांत जैन

प्रकाशक
श्री अनिल कुमार जैन
महामन्त्री
श्री कुन्दकुन्द भारती ट्रस्ट
18-बी, स्पेशल इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
नई दिल्ली-110067
फोन : (011) 26564510, 46062192
ई-मेल: kundkundbharti@gmail.com

Publisher
SHRI ANIL KUMAR JAIN
Secretary
Shri Kundkund Bharti Trust
18-B, Special Institutional Area
New Delhi-110067
Phone: (011) 26564510, 46062192
E-mail: kundkundbharti@gmail.com

इस प्रति का मूल्य—बीस रुपया

अनुक्रम

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ सं.
1.	मंगलाचरणः सरस्वती जयमाल	ब्रह्म जिनदास	3
2.	सम्पादकीय : धर्म और पर्यावरण : (जैनधर्म के विशेष सन्दर्भ में)	प्रो. वीरसागर जैन	5
3.	स्वाध्याय	आचार्य विद्यानन्द मुनिराज	12
4.	जैन योग का वैज्ञानिक विवेचन	आचार्य श्रुतसागर मुनिराज	20
5.	आचार्यश्री को समर्पित विनयांजलि	प्रो. (डॉ.) राजाराम जैन	25
6.	प्राकृत भाषा अवश्य पढ़ें/प्राकृत भाषा क्यों पढ़ें	प्रो. (डॉ.) कमलचन्द सोगाणी	29
7.	कविवर पं. दौलतराम : कतिपय समीक्षकों की दृष्टि में	श्रीमती नीतू जैन	31
8.	जैनधर्म में ज्ञानदान का महत्त्व	श्रीमती स्नेहलता जैन	35
9.	सम्यक्चारित्र के भेद-प्रभेद	किरण प्रकाश जैन	40
10.	जैन परम्परा में निषीधिका : एक चिंतन	डॉ. सुमत कुमार जैन	49
11.	आचार्य अमृचन्द्रकृत टीकाओं में आगत कुछ विशिष्ट बिन्दु	डॉ. शैलेश कुमार जैन	55
12.	प्राकृत-कोश-साहित्य की परम्परा : परिचयात्मक अनुशीलन	डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज	65
13.	वैशाली के आंगन में	प्रो. प्रेमसुमन जैन	79
14.	वैशाली-कुण्डग्राम	पं. बलभद्र जैन	81
15.	कुन्दकुन्द भारती में उपलब्ध ग्रन्थों का सूची-पत्र		91
16.	समाचार-दर्शन		93

'प्राकृतविद्या' के आजीवन सदस्य बनें

प्रिय पाठकों ! आशा है कि आपको आपकी प्रिय पत्रिका **प्राकृतविद्या** (त्रैमासिक शोध पत्रिका) नियमित रूप से मिल रही होगी, किन्तु यदि आप इसे आगे भी नियमित रूप से आजीवन पढ़ना चाहते हैं तो आपसे निवेदन है कि आप शीघ्र ही 1500/- रुपये जमा करके इसके आजीवन सदस्य बन जाएँ, ताकि इसमें कोई विघ्न न आए। विशेष जानकारी हेतु श्री कमलकांत जैन 9871138842 एवं श्री चितरंजन 97110 62265 से सम्पर्क करें। ❁❁

प्राकृत-कोश-साहित्य की परम्परा : परिचयात्मक अनुशीलन

—डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज*

भूमिका :

भाषा का विकास विषय के विकास के साथ-साथ चलता है। जैसे-जैसे अर्थ या वस्तु का नया निर्माण होता है, शब्द गढ़े जाते हैं, वैसे-वैसे शब्दकोशों की वृद्धि होती जाती है। ज्ञान और साधनों के विकास के साथ-साथ कोशों के प्रकारों की भी वृद्धि हो जाती है। संस्कृत, प्राकृत, पाली, हिन्दी, राजस्थानी आदि सभी भाषाओं में कोशों का निर्माण हुआ है। वैदिक विद्वानों ने उपनिषद् वाक्य महाकोश, प्राचीन भारतीय संस्कृति कोश, ब्राह्मणोद्धार कोश, उपनिषद् उद्धारकोश आदि कोशों का तथा बौद्ध विद्वानों ने बुद्धिस्ट एनसाइक्लोपीडिया का निर्माण किया है। जैन विद्वानों ने भी इस दिशा में अपना अमूल्य योगदान दिया है। अब तक अनेकानेक कोश हमारे सम्मुख आ चुके हैं। इन कोशों का परिचयात्मक अनुशीलन इस शोधालेख में प्रस्तुत किया जा रहा है। इससे प्राकृत-साहित्य की विशालता एवं समृद्धता का तो हम सभी को ज्ञान होगा ही, साथ ही प्राकृत साहित्य में प्रयुक्त शब्दों के वैशिष्ट्य का भी हम सभी को ज्ञान होगा। यद्यपि मेरे द्वारा यह प्रयत्न किया गया है कि प्रारम्भ से लेकर आज तक के प्राकृत से सम्बद्ध सभी कोशों का परिचय प्रस्तुत करूं लेकिन अज्ञानतावश और शोधालेख की शब्द-सीमा के कारण कुछ कोश छूट सकते हैं। अतः विद्वद्वर्ग मुझे अवगत करायें, जिससे भविष्य में इनको समाहित कर इसकी पूर्ति की जा सके।

कोश-साहित्य की परम्परा के उद्भव और विकास से पूर्व अनेक कोशों के

*सहायक आचार्य, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान, मोबाईल : 9586025390